

ASHA ARCHIVES

2848



२ मर्यादा ॥

ॐ नमो श्रीचक्रसमवाय ॥  
मनुमहामनिकानकाजि  
प्रवठायनीउरुनरुनरु  
अधियाव ॥ ५ ॥ नमः  
ग्वहम विरुह पंचमनक्ति २

॥ बाग ॥ रुनवी ॥ ॥ मर्यादा ॥  
नृषुर्वदिदहमं वृद्धीपं अय  
वनयकवर्म पंचमिन  
पंचवृद्धं विम्वस्तुजिनं वि  
शुद्धिपावावहं निमिनमा

नसाह्वरुहयतिमिलघनधानवृष ॥  
उपदीपं वा उपदीपनिगाह  
उविदिगं वन वा उपदिः  
दिनद्वनवाचियनवनः  
नवविद्यान २ ग्वनवाउदिवियसायक वक्रामसिक्कलनिधि

॥ मातवदानसया  
॥ न २ ग्वसनवाउपदीपव  
पथीखसुपनगु ॥ ॥  
धिनयाविय सफमृष्टाद  
विद्यान २ ग्वनवाउदिवियसायक वक्रामसिक्कलनिधि



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निखिलवदयनि ॥

यनामनकासुमडदकापविः  
वथीसफपविपूजितरुवजः  
यागा ॥ गन्धारुववी ॥

वृषश्चंवाप्तुनसपंचसाविपूजिया ॥

॥ गुवचनदिविद्वन्मारागतिपविता

मंरुलियगा २ पुक्षवयनिहा

ननिसंगनवस्यदुदुगी ॥ १ ॥

रगभकादहनपचरानस

॥ दुक्तदवीवति

२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वायंतिरुवनवीवाश्वीनमथापिकरुसमयानंद ॥

विचंवीनम्वनसहजानंद

नद ॥ ॥ पकवृद्धय

वनवपुमृदिनहृदया ॥

कश्चमनूयष्ट १ धनिविनमानंद ॥

२ कालेकमलासनहृदया

वस्वीधस्ववृष २ देवाभ्रसूः

हुंआः ३ हुंआः ४ हुंआः ५

॥ वागा ॥ पटमंजलिः











ॐ वक्र ॥

मूडाधन॥ ॥धवनसुसंखनदं हधनूश्मनंदसू॥ माहियवं  
दमन॥ ॥मायादं हः ॥ वीनजंगुश्माहियकनक्षाम  
स्वमहं॥ ॥नागागृगममा ॥ नगि॥ ॥यिवकनविम  
जिमसुलमाप्पस्थितिआनं ॥ दमनूतिधनाश्चकृवावाहि  
अलिङ्गक्षसम्बननानावस्मिमहाहवा॥ ५ ॥ ननाहंश्मनाः

ननहं॥ ॥नीलवर्धुचकुवकुपुगिमूर्खविनकाश्चनमानं  
दमनूतिधनाश्चिन्धवडाः ॥ अर्द्धचक्रजटामकूटधनाह  
उरुवनसू॥ माहिता॥ ॥ ॥ वज्रयष्टगजचर्मठमनूखदी  
गाविनमानंदमनूतिधना ॥ श्वावटिकपालपनमृषाभ  
विमलवृक्षमिनंधनावाघचर्मकरिर्वसिता॥ ॥ दिगीवि



५१५३२४॥

दिगंकाकाभ्यादिद्यमडाविनिदवी सहमानदमूनमिधवाश्नमा  
मिश्रीवकुसुम्यवा सनगु नूववक्षआनाधिनात ॥  
नाग॥भूहंति॥ ॥ हाडा हवक्षविद्यायिन समववध  
वायिकोवाकुनिववमाश्नुः क्वावक्तंमश्रुयामूयान  
मदूटकाभादिगंवना॥ ५२ ॥ वववभानुसमवववाया समव

मूत्राधानकावा २ रुमविवाहिनि वज्रवावाहीदुमहियाभान  
मावा ॥ ॥ नानिहाय भवनंमरुमयन वायेवंरु  
वायिमंवावा २ गगननीवाव भूवधिवज्राडा भनमभुल  
रुवाविना ॥ ॥ श्रियंध उयटह द्वादिंगवसमनय  
यिसयिमून्यरुहावा २ रुमविवाहिनि वज्रवावाहि रुन्नविनद







वज्रगङ्गाधारी श्री ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इत्यमलमहिमशुलन  
 वपुनवनंमनंकावा २ हाउरु ॥ मलआरुवधविभुषितः प्रप  
 नयधृष्टलावा गिनिशीनीः ॥ विधयंति यंतिनिनयनाः ॥  
 ॥ ॥ कनटिष्यन् गी ॥ र्वनूड नवसिन्धमावा कृत्  
 नयधृष्टलावा गिनिशीनीः ॥ सिन्धुसिन्धुन कर्जस्तुला २

२ वज्रगङ्गाधारी श्री ॥  
 कस्तुरि कर्पुन काम्बुन मुखमावी ॥ ॥ रुनयिस्त्रनवगवास्तुलि  
 दाभा २ गीवगदवीपुम्भदं श्री ॥ हनुवपाना ॥ ॥ ० ॥  
 बागा ॥ मावसि ॥ ॥ वज्रः ॥ आगिनि हनुववाया २ जिउ  
 वनक्षमथ दहिमप्रा २ हा ॥ ॥ ३ ॥ पिवायिधमहानसः  
 महासुखकनिया ॥ २ वगदवी स्तुनयि अनूरुनहान ॥ ॥







नत्तमकूटकाधायिपं॥ ५॥ नानामिश्रवद्विवं रुवसिंधुवसिंधु  
 नमनंश्चिन्मनाथविस्वया पितं वदालिधंसनकवनं॥६॥  
 ॥ अन्ननजानूत्तिगणि जुवनविनं संत्यति सुखगे  
 दगधनंश्चामनकूनिहृदि पावधनं रुवाविज्ञातनबंध  
 नकवनं॥ ॥ नानानवाहाननायुनं काटिमखलहृत्विनदहा

१०

श्री  
 विष्णु  
 नमो  
 नमो  
 नमो

२५ दृष्टाकनात्रिलिखमवदनं विजुवनवायाप्रवधुविनं॥ ॥  
 विनाधिपति सर्वरुयहननं प्रनपिमावादि सांननमनसी  
 २५ ननननजादि वदितपा द सर्वसिद्धिभाऊ हलदं॥७॥  
 नागनाकनदि॥ ॥ श्रीह वजननात्मादवी विरुवनना  
 थश्यकाजनव्यापितयकवधुदहा॥ ५॥ नानामिश्रवद्विवं रुवसिंधुवसिंधु



ॐ श्रीगणेशाय नमः

हायवेस्य श्रीहनुकशीगुय स्ववीवज्जागिनिमन्यता ॥ ॥३॥  
पूर्वादिगंहेन रुनवनिलव ॥ ॥ धर्मरदहि नपापधविद्याम  
विश्वना ॥ ॥ यस्मवीवी ॥ ॥ श्रीगिनीदवीरगभवनिनी ॥ ॥  
लवज्जा कालसंवजा ॥ ॥ ॥ वागाकाभाउ ॥ ॥ ईविम  
संरुवखसमदं हा नवनसं वासिन नवनधवा २ हादमनुज

११

वदवर्ष हादमवर्ष नवनकनर्ष ॥ ॥ ॥ नमामि श्रीविचवांभनंमा  
नरुयरु नरुयहवनं ॥ ॥ ॥ वरुनविंसनिप्रिपीथस्वन  
यं रुविसेवीनविने स्ववी २ ॥ ॥ वरुनवकुप्रदक्रिष्ठा दवि  
संपन प्रकलिनस्थिता ॥ ॥ ॥ प्रहासंयन अलिकालिप्र  
दवांता अगिस् दवा २ हादसदवी नुकरावा नमामि श्रीचवां



उदितगा॥

सम्बवा॥ ॥सतगुनवचक्षुसीनंगतधविद्यारुनयिसेगी  
नशीकृविम॥२दानपतिन॥ मनाहर्षसयमधुल.आ  
वाधिता॥ ॥बाग॥विह  
यवनईताश्चलंस्तुहदामक॥ काठानकृता॥ ५ ॥धानद  
ष्टानरुवनिस्तंनिताश्चल्यनिबंजन.माकृलीकृता॥ ॥

१२

अवोनिनिहिनगाय

दिनकनमधुलमखगताश्चानुधामृतवसीस्यवलंकृता॥ ॥  
दग्धआलीहाय.प्रतिनिवई॥ ताश्चवासून.नवसिबनमि  
ता॥ ॥गभवक्रियवनप॥ तिगुवरुताश्चकवावाहि  
डू.सिलनमिता॥ ॥ बाग॥.कामाठ॥ ॥अव  
निनिहिनगानूनिलसमदः॥२ककनयिधयधरिषमवदक्ष॥



सर्वीकांता॥

ननाईं ईं ननाईं ईं ननाईं  
दितघन शुक्तिव्यहितमंग  
था॥ ॥ हनिहववक्ता ॐ  
अकृ हयहवना॥ ॥  
दहा २ गगनविवाष्टिग वलहलदायवी॥ • ॥ बागलसोध

वलकाधवाया॥ ॥ निवि  
रया मंघर्जधविशितवनना  
नुवउमाला २ मालविघ्नयुक्ति  
विविधितनस्रधोविलंकन  
॥ बागलसोध

१३

नाथी॥ ॥ सर्वीकानामहासुखकृत्रिया वउम्मानन्ददहा २ वि  
कुवनहलयिमहासुखवा  
॥ ॐ ॥ नपापनिनोपवन  
२ सर्वविकल्पविधिसनीदेवी  
अमिताभमधुलउदयान स्थिति कल्याणनमिव नृपधनीः २



श्री  
गणेशाय  
नमः

कनकिकयालखद्वांगधारीप्रह्लादनवन्दायनी॥ ॥दिगंव  
नमकुटकभीचक्रिकुक्षुलक  
यनधारीशीवनूदननसिल  
ननदवीविवहिरुगवअरु  
सिवांगतधनियाभवनिसमनसीवजा॥ ॥वागावसंत॥ः

१४

अनसिकुसुमयुतिदहप्रलब्धनाशिविविधिवत्तमकुटविरुषि  
ता॥ ५२ ॥नावयिवशीअ  
विसासयिअचला॥ ॥  
ना॥२॥प्रह्लाअलिंगनअद  
गचंद्रवलयंकना२॥निरुतखर्जनर्जनीयाभा॥ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मानववदुनदर्पनिषिलविघ्नरुक्ताश्च विभक्तिर्युगनगगनविना  
सनी ॥ ॥ वागवाकनदि ॥ ॥ श्रीमद्भगवत्पदवचन  
हविनविजयाश्चैव हस्तः ॥ खजधविनागवास्तदहं ॥ ११  
पू॥ ध्रु ॥ नमामि श्रीमः ॥ ॥ कृमावाश्च गदीव्यवज  
गतगुपुवचनवापिता ॥ ॥ पुरुषकध्वनीशुरुषघ्नगुपुवाया

११

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीधर्मकुक्षाननपालमसुललंकृता ॥ ॥ भगवत्पदवचन  
भगवत्पदवचनवायाश्चैवः ॥ भगवत्पदवचनवायाश्चैवः  
रुना ॥ ॥ वागवाकनदि ॥ ॥ श्रीमद्भगवत्पदवचन  
नवपवृद्धश्चैव यनिनं ॥ ॥ भगवत्पदवचनवायाश्चैवः  
नाकयिभ्रवध्वकानकमानखद्वागुमवृगीव्यवृद्धनवति



समा॥

॥ अंकलस्य निबंजनमूकलवीहना २ अननकनव

गगनिसयानविमुद्धि॥

॥

काहं वावकुहं वैरु वाहं वोल

वीना २ अत्रधुवकाद्रुगति

महमनवशा॥

॥ हलह

१३

हलहं हमहमनस्रुं शो

विधिदुवननाथप्रकृसम्ब

नवाया॥

॥ वाग॥ नाट॥

॥ सवावजंगनगुनसम्बन

वीना २ अनन्यमकावृक्षकनिगसूखचिह्ना॥

५ ॥ सम्बनसं

नकृवमयितामं विविधि

विकल्पविनामननृदा॥

दवीवावाहीकुम्भमहिगद

हा २ रुवरुयहननविमान

वि(स)धा॥

॥ सवालवि

घुहनिमनिननिनृय ॥ २ न

नियतिस्वर्गनिवासननृदा॥

॥ रावाहावकृमहनिमनिरु



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२२ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ • ॥ वागगावडगी ॥ ॥  
विकि कलकलिकि वाचकम  
लमाला २ सिलविकि विकिल  
नादिवंधुविवाया ॥ ॥  
याह रानोथयीसम्बनवाया ॥ ॥ वक्रकवाटवाहा थधविया

११

वीथकियाउखदोराग २ संपूतथगिनीकमलविहसिंरानमहा  
सुखमवीपुष्पदं ॥ ॥  
वक्रानयिवहविविहनरं  
किरक्तिहववमृद्वुवरु  
संयुक्तिलयियागवक्ति कर्तुयाल थीहवववनपुष्पदं २ पुहा

वक्रवानहिमृलिंगनसम्ब  
राशवाहुलिकाललयिया  
वनपुष्पदं ॥ ॥ सहज



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अलिंगय किं दत्तं हनुव विना सयि शुन्य कवूत्ता ॥ ॐ ॥  
नागा विरास ॥ ॥ दिह  
मवृट्कं ठा यि नि ला च ना ॥ ॥ ॐ ॥ नभा दवी वृद्धा  
विनि विभ्व जननी श्रुतिः  
नी ॥ ॥ दहि नवान वज्र विना सि तदग्ध किं श्वाम कवा टक

१८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

चतुर्मास संपी वयि ॥ ॥ नव निम लुल माभ्य उां दियान गम  
अश्वत्थ नो पुन वन सत क प्र  
वा दवी सवन वम हि ता श्रु  
नागा ॥ वस क ॥ ॥ कि न  
क्षि श्वि वा सयि सम वस दं द अलि गना ॥ ॐ ॥ नी वी मुह स



वयं नृणां वयं वसुं पुरं २ गमश्चाश्रुलिंगनश्च नयन ॥ १ ॥  
 वायसंरुगसमयनधीयम ॥ यने २ बागविवागइयिमाः  
 म्यनिषर्ष ॥ ॥ अरु ॥ कृलिंगमंथागविनखनाः  
 २ सुवननवप्रमुखदंदाः ॥ लिंगक्ष ॥ ॥ दहदिक  
 सुवनः श्रीथागम्यव २ प्रक्षमामिहानं वीश्रुलिंगक्ष ॥ ० ॥

१८

वाग ॥ वामकवि ॥ ॥ जिनवननयनसुवनश्रीकांषाकेन  
 निवासश्च निवमयमक्षिना ॥ २ नयालमशुलमाय्यमसि  
 हनकिवक्षगगतमरुलः ॥ माय्यमनीना ॥ ॥ ॥ वि  
 धागंकिगंधियावश्रुवताव ॥ यावदवपुनमामिवृगम  
 लाकांश्चवदव २ सिद्धायागीवश्चरु ॥ पत्रिकुमवाया सुवनप्र

जिनवननयनसुवन



निवृत्तामक्षिननंदद्वयं॥

यावद्वामकामलध्वजः॥

कदाचिद्वदः खरुयद्वयः॥

गतिनमामि श्रीवृगमलोकाः॥

वदमलद्वयस्वर्गमध्वजालद्वयं॥

॥ वायिकामलविकामिनयोधि॥

दुष्कयोंसमवन्नबागवृष्ट

॥ ॥ ईरुगनिकायारु

व्यवद्वयश्चमामिश्चीन

॥ ॥ मरुमिद्वयिभक्त

२०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

लक्रनवायागगतनाथशूरयदाताश्चामिन्नरुमिथंगतध

विया श्रीलाकाव्यवमनक्षः॥

इवंगमरुवक्षश्चिन्नतन्नि

लकंभा॥ ॐ ॥ गगतनः

लविघ्नविनामनीद्वयी॥

गतिः॥ ॥ वागवसीन

स्वरुश्चनीलशक्तिपिंग

वांयाकृयागुधद्वयीश्चमामि

॥ वक्रनयनपिष्टिबृद्धमात्मा २



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्वर्गकवटिकपालनीलान्त्य ॥

स्वर्गलंवादनमवाकाको ॥

मानाश्चनयिभूषाघवजव

उत्ता ॥ धामकानगनभ्राता

रुननंदददवं ॥ ५२ ॥ नमामि श्रीलावां च नमिषुवननाथ २

॥ व्याघ्रवर्मवम्पुप्रसालिंहा ॥

॥ वनधमनधयाउर्गनावनी

विगीता ॥ ० ॥ वागा ॥ माला

धियावश्चिदायागीवधुद

॥ नमामि श्रीलावां च नमिषुवननाथ २

२१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कवनामयगगनउद्वावक्षि ॥

गपालाश्चागयगुगधवंदि

मननूयायहनक्षश्चाधि

सखावगिषुवनधर्मभव

धनक्ष ॥ ० ॥ वागा ॥ वसक्त ॥

॥ हविहवनवक्त्राः ॥ द्वादिति

नवनक्ष ॥ ॥ उक्ता

द्विद्विद्वः खहनक्ष ॥ ॥

॥ क्षश्चिलावां च नमिषुवननाथ २

॥ मधुविपुषिपूनाइयि







विष्णुवनकाशिका॥

वदुनदिगदुम्न हलनकुदवीरिधिनिवदवीनाचयिवान॥  
हनिह नवम्नाः॥ दुम्नसुन  
लसंहाव॥ ॥ वागा॥ गः  
कालिनः मुनीनिः सुनवायः  
नाचयीवजसत्त्वपत्रमभ्यनवीनयति॥ मलश्रीसहस्रवि

गह्रधादमयागिनीसम  
धरुनवी॥ विष्णुवन  
नविनयवर्ति॥ ध्रु ॥  
मलश्रीसहस्रवि

२३

कोनाः॥

वक्षदमसूर्यसहस्रवर्ति॥  
सत्त्ववर्ति॥ ॥ वागा॥  
याथाना मुम्ननवनकावा  
कनूक्षविः यायिनलाला॥  
॥ नडिडिमाताहिनवगाः॥

॥ वद्विविह नपविमन्नाचार्य  
मति॥ ॥ वागाः॥  
श्चनवापिथीहाः॥ वगाः॥  
॥ ध्रु ॥ मन्नयर्गवून्नुवगा  
॥ नहिंरुनखागः॥ गमधस



धूम्रांगनी॥

यिनपिवनयियाः॥ २॥ हानकालिजनयाः॥ नरं॥ नूवजनयाः॥  
॥ वउसमकासुवि ॥ सिद्धाकपुनलावनयाः॥ २॥  
मलयऊयिंधनंभविजन ॥ नहिहवखाजनयाः॥ ॥ १॥  
पुपुनऊककनंयुद्धागुद्ध ॥ नमूनः॥ २॥ नीवहहमंग  
वंडावयी नहिहसनापनयाः॥ ॥ १॥ ॥ याग॥ श्रीधनी॥ ॥ १॥

१४

धूम्रांगनीवडकानी॥ २॥ हीषधपिंगलवयन॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥  
नरं॥ नूवजनयाः॥ २॥ हानकालिजनयाः॥ नरं॥ नूवजनयाः॥  
मलयऊयिंधनंभविजन ॥ नहिहवखाजनयाः॥ ॥ १॥  
पुपुनऊककनंयुद्धागुद्ध ॥ नमूनः॥ २॥ नीवहहमंग  
वंडावयी नहिहसनापनयाः॥ ॥ १॥ ॥ याग॥ श्रीधनी॥ ॥ १॥







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

रुनागमपुनश्चमयाश्चिलिश्वावाञ्जुनवृक्षावृलिकनागभवर्ष  
क्षमया ॥ ॥ द्वादशभुजा ॥ द्वादशभुवनचतुर्वर्गवना  
द्वादशनयनाश्चनयिकर्ष ॥ पात्राष्टकानवक्षकालिनायि २३  
शिष्टाष्टयिवदना ॥ ॥ वागमाति ॥ ॥ पर्वक  
पालाधविधमोनिर्पवहानपर्वमूढारुनक्षत्रनवमिलमालाः

जीवसारवाद्यवर्मकतिहृषिकवमक्ष ॥ ५ ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं कान  
संज्ञानवदनाश्चवर्षलेखादः ॥ वनीलसमदहकाधधिप  
जीमहाकावा ॥ पंचामृतवस ॥ दर्पक्षलायनवृक्षकापाल  
धना ॥ ॥ वक्रपमात्रातिः ॥ क्षिनयश्मधानल्यकानही  
षमवदनाश्चर्द्धप्रक्षलिता ॥ पिकलकंभाउवमरुहंभाकवृक्ष



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मय ॥ ॥ कवटि कपाल धनि क्षख्वांग भनागरुय नाग नू  
तुलहा वाश्नाग मिल सिद्धा ॥ ॥ पृथ्वी नाग मृग नाग रु  
वक्षसः ॥ ॥ जिह्वा ॥ ॥ वनधो वीरुध निक्ष भनाव ॥ ॥ २१  
इसासन सा नं कु कवी ना ॥ ॥ पुमान्ध नाद वरा वा साव  
कृति मा मृग रु व म ना ॥ ॥ नाग ॥ रु व वी ॥ ॥ मृग रु

॥ ला ग मे र वि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ विदिगं रुय न ध्मि व मान व रु व व द न ॥ ॥ गगन ॥ ॥ म  
वगगन मूनं मूनं का नाग ॥ ॥ नठ म व रु व रु वा जि या  
न ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ न म नि य ॥ ॥ थि ठा कि नी प थ रु ग नि नी  
रान ठा कि नि ग न थ रु ॥ ॥ रु रा ना ॥ ॥ ॥ पूर्व उ रु न  
पश्चिम द कि न व रु रु व न वि द्य मान वि द्य र व थि यु या न र व रु ठा



किनीधानवमानठाकिनीवधुनठाकिनीवधुनदवी॥ ॥  
 सिंधिनिव्याधिनीगंवूकडु लकिनीखद्योगपमृमृमृमृ  
 हस्ता॥ २॥ ठाकिनीदीपिनीव ठासिवांवाजनी-धाववमान २५  
 संगसवदना॥ ॥ गिन जननीदवीठाकिनीहुंर  
 पायमानक्षपथे मृद्वारनक्षविहृषिताश्चक्षुहृगकवगय

(कन्यापुत्रेण॥

श्रवदीरागायपवमम्वनीहानदवी॥ • ॥ नाग॥ ललित॥ ॥  
 म्रवयकनशीमरूवमावा २॥ मधनकिनक्षसंकासन  
 दहा॥ ५॥ ॥ दवशीमरू थापुवनवापिनाश्चक्षु  
 खंरुववदहिनकवा॥ ॥ वामपुस्तकाधनसुवगुनवा  
 याश्चपमपुगमीकासनदहा॥ ॥ दहिनवामधनधनसं



गङ्गासूत्रम्

वधनिश्चयउच्यतेनमामदण्ययानप्रहानम् ॥ गङ्गातवयननाथ  
युमादितरुदयाश्चरुमि ॥ नमस्खललववप्रसादा ॥ १  
नाग ॥ धनाश्री ॥ ॥ गङ्गा ॥ खणिनयनेनौदवपदवनः ॥ २९  
नृत्याधिपतिगारुध्वनाश्च ॥ मक्षिमूकानवहारुध्वनातव  
शिविनक्षसंकारम् ॥ ५ ॥ मानियाविद्यमानियादर्यमानिया

इहखविनाशनंश्चमानियामानामानसंज्ञासामववपप्रइःखना  
मिना ॥ ॥ यवमुवानां ॥ दूधवज्रखर्त्रुहिदिपावद  
हिनकावाश्चमूलधनख ॥ दीराखयनकवटिवापे ॥ ३  
॥ ॥ विविगुवम्पुर्वीवक ॥ हिवमगुगाइकमक्षिमिनि  
नाश्चलंवादननधुनलीवादनभागायायेनमिनिमिनिवागं



गङ्गाजिने॥

॥ वत्सामनधुनवत्सामामुखिकमुखमृगिमुन्दरुदि  
नादत्तासममुखदाता नभा ॥ १ ॥  
वाग॥ रुनवी॥ ॥ गङ्गाजि ॥ ॥  
कूलिगमृद्ववाविशुमन ॥ ॥  
खद्गमकापालमृद्वना॥ ॥ ॥  
॥ गङ्गासमवनायावाहलिमुक्त ॥

गांगुविष्मश्मावयिन्नवापयियावमायासासुखं रुमृडात्रीक्ष  
॥ ॥ ॥ पागवुम्भमृगुलवा ॥ ॥  
लमालाश्नीलहनिनभाहि ॥ ॥  
विकनामृद्वना॥ ॥  
यावकालिवागिविन्दमृडा ॥ ॥  
विग्वकूलिगमृद्ववाविशुमन ॥ ॥



अथ यानि नाना

कृष्णवर्मपठमूत्रा॥

शिवकामहाविबंवीवाश्क

शुक्रयिसयनसंसावमूर्धः

अथयनिबंजनमृद्वयमृ

पिताश्मून्धताविवाशितनायश्रुद्वियादवपानविश्रमक

॥शुषिर्सीवीनेविबंघननायकशि

नृसर्गगानवीनवीनम्वन

ना॥ ॥नागा॥निबंघना

नृपमगगनकमलकंधा

पिताश्मून्धताविवाशितनायश्रुद्वियादवपानविश्रमक

31

लिता॥

॥नमामिनिबावंकनिबकुनखरावःहंशुहवनः

श्रीद्धादिताश्मवदवंदुस

मनजप्रकाशितकलकवंदु

समव्यापिता॥ ॥षठग

धागंवलसाधिवचकवशि

मनमसुलग्नमवीक्षशनि

मलदृष्ट्यावचकवध्यापी

नमृहिनिशिखवलकनमयसाधिता॥

॥आनन्दपवमा



विषयः॥

नेदविनमासहजावरुवानेदअसेरुवा २ पवनमाविनमागनडा  
दिनमहासखसुगनसेपद प्रापिगा॥ ॥ हं वरुका  
लवकागीवकासम्वनमून काटिसिद्धापावंगगा २ यी  
रुतउठियात्रपूरुगिनी आबंधविंपुडुमहासख  
मानहं॥ ॥ नाग॥ ललित॥ ॥ विषयविषयविन

२२

पवनसंशारागालयिवंडालीनारिकमल २ दहयिजिनविमूढ  
निमवयिसुवतवऊयिधिः आरासमयग्धमसयव ॥ १  
॥ ५२ ॥ नममंडधाषका लवका हं वरुसम्वनविम्व  
वृपं २ ययियइमसंथारास रुवनिम्वनासहगानन्द  
मयहानवृपं॥ ॥ यऊपर्यंकसतकुं कुमनूनतनूनामसं



33

[illegible]



वसंवाधियाव२ई दाश्रालिंगनश्रुद्धयसंरावनावयिदानश्री  
 सम्वनवाया॥ ॥कालि ॥ गद्य२४गजवर्मप्रिभुनवान  
 दि०उमवृसहाहिता२मर्क पुनितकापावखदांक पाठ  
 यवगुवृममिबंधवा॥ ॥ यक्किनेमवृटश्रुलिंकन  
 षठमूद्राहवनविहृषिता२श्रालिकालिइयिअलिहवाप

३४

यिव्यायवर्मनिवासनकृष्णः॥ ॥नवमिलमालश्रुलंव  
 यासम्वनदिव्यवृष्टिः कवृक्षरुदया२रुमरुम  
 प्रावृष्टुइयायमवक्षगभव क्रियवमादिवरुगीता॥१  
 रथका॥ ॥नृरुनांका मनयदणीसिनसिक्व  
 २॥गवींवकंस्कंधमानंदमूर्तीवमालिव्यगपानिपविगत



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मिखलं ग्रीखमानंदप्रानि. यावाथा मृष्टिक ॥ २४ ॥ घनलिवन  
 निखनागवर्म्मननीयया. याथीसम्बनवडिडुवनवि  
 मयिदाकिनीयववर्द्धि ॥ ॥ ॥ नागा ॥ ग्वडगिनि ॥  
 दविनि. सनवनविनासयि. वयिस्य २३० रुनाडा मरु  
 लनाया ॥ ॥ नुंकावेहमनगकनिर्वासियोन ॥ ॥

३५

सर्वनाथागतासाकं सर्वनाथागतानयं सर्वधर्मागनिवासाय  
समं तुल्यं मूलं मे ॥ ॥ अमियं अमियं निर्विक्रमं द  
स्य सहस्रं संद्वियं गिन  
ऊन संयुक्तं सर्वानुवनवि  
तावमं तुल्यं मूलं मे ॥ ॥ ययउगागिनि वममं मनाद

॥ चण्डिका गिनि च नमः नमः ॥



वज्रवावाहि श्रुतिगनकाल॥

यविस्वधकंसमकरुडुवा

उधरुवांशकवृक्षकंवालि

नृवाली॥ ॥सर्वसत्त्वम

समकरुडुविश्याय धाषम

उलसायथि॥

॥सक्तिधर्मप्रसंगं हानव

वागंराखमकुलंमरुमं॥

श्रयैश्रयै श्रुतिगन नीलव

हविर्लं मुदेषुक्तिनीर्मन

॥श्राक

३३

संपूर्यसर्वगगतमभायथयदंसर्वनवानादिनापीत्वा सर्वविकल

य.भाहकननं दाकिनि श्री

नक्तिनगुन हानदाय प्रा

हस्यमानसा नृस्यप्रसंस

मायांमालविन्दुसहस्रनिवा २भाहमानदर्पन शुदिनमाया

हनुकादिना गवकायविवर्त

कृहता २गस्यातस्यकृपादुन

यवहं ॥ ॥वाग॥दसावा



माह ॥ ५ ॥ असंस्तानमृसाना २ भाग दस माह द्वादश दिन निव मृसा ॥

॥ मृनामिषनयनहृ

वपूत्थइ ॥ ॥ सहजसंरा

उषापवमवासननव ॥

दशगावन्निनिइषयाहवचकननिया ॥

कवृचिना २ वृमविचिकइष्ट

वनयउदनागकधनीया २

मृवध्वउदयचंदयाययसा

॥ ॐ ॥

३१

१३३३३३

लिहइकाव

चमनवात्मा

इविमहएव

इदिग

१३

१३

१३

१३

इविमहइकाव

चमनवात्मा

इविमहइकाव

इविमहइकाव

इविमहइकाव

१३

१३

१३

१३

१३







